३. मराठा सरदार – भोसलों का पराक्रमी घराना

अस्थिरता का समय : संतों ने जिस प्रकार लोगों के मन में भक्तिभाव का संचार किया, उसी प्रकार वीर मराठा सरदारों ने महाराष्ट्र में शौर्यपरंपरा का निर्माण किया ।

वह समय अत्यंत ही अस्थिरता का समय था । महाराष्ट्र में बीजापुर के आदिलशाह और अहमदनगर के निजामशाह के बीच हमेशा युद्ध होता था । युद्ध के लिए सेना की आवश्यकता होती थी । इस काम में वे मराठा सरदारों की सहायता लेते थे ।

शूर वीर मराठा सरदार : मराठा जैसे जीवटवाले और शूरवीर थे वैसे ही वे साहसी तथा स्वामिभक्त भी थे । युद्ध में बड़े-बड़े पराक्रम दिखाना उनके लिए गर्व की बात थी । हाथ में भाला, कमर में तलवार लटकाए साहसी मराठा जवान घोड़े पर सवार होकर अपने सरदारों की सेना में शामिल होते थे । उनके पास सेना रहती थी । सेना रखने वाला मराठा सरदार जब भी सुलतान के पास जाता था तो वह उसे अपनी नौकरी में रख लेता था । सुलतान उसे सरदार का पद देता था । कभी-कभी जागीर भी देता था । जागीर पानेवाला सरदार अपने-आपको उस जागीर का राजा मानता था ।

बीजापुर और अहमदनगर के सुलतानों के दरबार में कई बड़े-बड़े मराठा सरदार थे । उनमें सिंदखेड़ के जाधव, फलटण के निंबालकर, मुधोल के घोरपड़े, जावली के मोरे तथा एलोरा के भोसले आदि प्रमुख सरदार थे। सिंदखेड़ के जाधव देवगिरी के यादवों के वंशज थे । शिवाजी महाराज की माता जी जिजाबाई सिंदखेड़ के लखुजी जाधव की बेटी थीं ।

शौर्य की परंपरा : ये सरदार बड़े शूर वीर थे परंतु उनमें से कई सरदारों में परस्पर बड़ी शत्रुता थी । संगठित होकर पारस्परिक हित के लिए कुछ करना चाहिए; ऐसा विचार वे कभी नहीं करते थे । यही कारण था कि उनका शौर्य उस समय दूसरों के काम आता था, लेकिन ऐसा होते हुए भी मराठा सरदारों ने महाराष्ट्र के हजारों जवानों में वीरता की भावना भरी । उन्होंने बहुत-से पराक्रमी वीर तैयार किए । मराठा सरदारों ने महाराष्ट्र में शौर्य परंपरा को जीवित रखा । महाराष्ट्र के शूर घरानों में से एलोरा का भोसले घराना बहुत ही बहादुर निकला ।

घृष्णेश्वर का मंदिर : लगभग चार सौ वर्ष पूर्व की बात है । एलोरा की गुफाओं के पास घृष्णेश्वर का सुंदर मंदिर जीर्ण अवस्था को प्राप्त हो चुका था । उसकी दीवारों में बड़ी-बड़ी दरारें पड़ गई थीं । मंदिर का पुजारी भी मंदिर छोड़कर चला गया था । इतने महान देवता और उनके मंदिर की ऐसी दुर्दशा ! उस मंदिर को देखकर भक्तों को बड़ा दुख होता था । आगंतुक भी पीड़ा से भर जाते किंतु उसकी मरम्मत की बात कौन सोचता ?

एक शिवभक्त रोज नियमपूर्वक उस जीर्ण मंदिर में आता था । शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ाता था । हाथ जोड़कर अपने मन की इच्छा भगवान

शहाजीराजे

शिव से कहता था । एक दिन उसने मजदूरों को साथ लिया और मंदिर की जीर्ण दीवारों की मरम्मत करवाई । उसकी सारी व्यवस्था ठीक कर दी । घृष्णेश्वर का खोया हुआ वैभव लौट आया । यह सब किसने किया ? कौन था यह शिवभक्त ! वे थे मालोजीराजे भोसले ।

एलोरा के भोसले : एलोरा गाँव के पाटिल मालोजीराजे भोसले महान शिवभक्त थे । विठोजीराजे उनके छोटे भाई थे । ये एलोरा के बाबाजीराजे भोसले के बेटे थे । एलोरा के पाटिल के अधिकार बाबाजीराजे भोसले को मिले थे ।

मालोजीराजे और विठोजीराजे कर्तव्यनिष्ठ और शूर थे । उनके दरबार में कई सशस्त्र मराठे थे । वह समय बड़ी अस्थिरता का था । उत्तर के मुगल शासक ने निजामशाही पर आक्रमण कर दिया था । तत्कालीन दौलताबाद निजामशाह की राजधानी थी । वहाँ मलिक अंबर नामक उसका एक वजीर था । वह बड़ा पराक्रमी और बुद्धिमान था । उसने दौलताबाद के निकट स्थित एलोरा के भोसले बंधुओं का पराक्रम देखा था । अतः उसने निजामशाह से उनके शौर्य की प्रशंसा की । निजामशाह ने मालोजीराजे को पुणे और सुपे परगनों की जागीर दे दी ।

भोसले का घर वैभवसंपन्न हो गया । उमाबाई मालोजीराजे की पत्नी थीं । वे फलटण के निंबालकर घराने की थीं । उनके दो बेटे थे । एक का नाम शहाजी और दूसरे का नाम शरीफजी था । शहाजी जब पाँच वर्ष के थे तब मालोजीराजे ने इंदापुर के युद्ध में वीरगति पाई । विठोजीराजे ने अपने भतीजे और उनकी जागीर की रक्षा की । उन्होंने शहाजीराजे के साथ लखुजीराव जाधव की बेटी के विवाह का प्रस्ताव रखा । लखुजीराव जाधव की बेटी जिजाबाई सुलक्षणा थीं । जिजाबाई के लिए विठोजीराजे द्वारा रखे हुए प्रस्ताव को लखुजीराव ने स्वीकार किया । लखुजीराव निजामशाही के शूर और पराक्रमी सरदार थे । उनके पास बहुत बड़ी सेना थी । निजामशाह के दरबार में भी उनका बड़ा सम्मान था । उन्होंने शहाजीराजे और जिजाबाई का विवाह बड़ी धूमधाम से संपन्न किया । जिजाबाई भोसले परिवार की लक्ष्मी बनीं ।

शहाजीराजे : निजामशाह ने मालोजीराजे की जागीर शहाजीराजे को दी । शहाजीराजे पराक्रमी थे । निजामशाह के दरबार में उनका बड़ा सम्मान था । उत्तर के मुगल सम्राट ने निजामशाही को जीतने की योजना बनाई । बीजापुर का आदिलशाह भी उनसे मिल गया था । तब निजामशाही को बचाने के लिए मलिक अंबर और शहाजीराजे दृढ़तापूर्वक लड़े । दोनों सेनाओं को उन्होंने पराजित किया । यह विख्यात युद्ध अहमदनगर के पास भातवड़ी नामक स्थान पर हुआ । इस युद्ध में शरीफजी वीरगति को प्राप्त हुए किंतु शहाजीराजे ने वीरता का परिचय दिया । अतः उनको शूर सेनानी के रूप में ख्याति प्राप्त हुई । दरबार में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ी ; फलस्वरूप मलिक अंबर उनसे ईर्ष्या करने लगा । इस कारण उन दोनों में वैमनस्य बढ़ता गया । अतः शहाजीराजे ने निजामशाही छोड़ दी और वे बीजापुर के आदिलशाह के पास चले गए । आदिलशाह ने उन्हें सर्वोच्च 'सरलश्कर' की पदवी से सम्मानित किया । कालांतर में निजामशाही में बड़ी उथल-पुथल हुई । वजीर मलिक अंबर की मृत्यु

हुई । उसका पुत्र फतह खान धूर्त था । अब वह निजामशाही का वजीर बना । उसके कार्यकाल में निजामशाही का पतन होने लगा । मुगलों के आक्रमण का भय उत्पन्न हुआ । निजामशाही को इस स्थिति से उबारने के लिए निजामशाह की माँ ने शहाजीराजे से वापस आने के लिए प्रार्थना की । तब शहाजीराजे आदिलशाही को छोड़कर निजामशाही में वापस लौट आए ।

स्वाध्याय

१. कोष्ठक में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो :

(अ) महाराष्ट्र के शूर घरानों में से एलोरा के .... बहुत ही बहादुर निकले । (मोरे, घोरपड़े, भोसले)

(आ) बाबाजीराजे भोसले के मालोजीराजे और .... दो बेटे थे । (विठोजीराजे, शहाजीराजे, शरीफजी)

(इ) .... निजामशाह का वजीर था । (मलिक अंबर, फतह खान, शरीफजी)

२. रिश्ता बताओ :

(अ) मालोजी राजे – विठोजी राजे ....

(आ) शहाजी राजे – लखुजीराव जाधव ....

(इ) शहाजी राजे – शरीफजी ....

(ई) बाबाजी राजे – विठोजी राजे ....

३. उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

'अ' स्तंभ	'ब' स्तंभ
(अ) सिंदखेड़	(१) निंबालकर
(आ) फलटण	(२) घोरपड़े
(इ) जावली	(३) भोसले
(ई) मुधोल	(४) मोरे
	(५) जाधव

४. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) घृष्णेश्वर के मंदिर का जीर्णोद्धार किसने करवाया ?

(आ) निजामशाह ने मालोजीराजे को किन परगनों की जागीर दी ?

(इ) निजामशाही को बचाने के लिए कौन वीरता पूर्वक लड़े ?

(ई) आदिलशाह ने शहाजीराजे को किस उपाधि से सम्मानित किया ?

(उ) शहाजीराजे आदिलशाही छोड़कर वापस निजामशाही में क्यों लौट आए ?

उपक्रम

महाराष्ट्र के मानचित्र में अहमदनगर, फलटण, एलोरा, पुणे, सुपे को दिखाओ ।

टिप्पणी : यहाँ 'मराठा' शब्द 'विशिष्ट जाति/समाज का व्यक्ति' इस अर्थ में नहीं है बल्कि मराठी भाषी अथवा 'महाराष्ट्रीय' इस अर्थ को सूचित करता है ।

6939TV